1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यद्यद्यामि तदा भर।

अथर्ववेद 20/118/2

हे प्रभो! जो-जो मैं मांगू वह-वह मुझे प्रदान कर।

O God ! shower your blessing on me.

वर्ष 42, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 फरवरी, 2019 से रविवार 17 फरवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती

195 वाँ

जन्मोत्सव

फाल्गुन कृष्ण दशमी विक्रमी सम्वत् 2075 तदनुसार 28 फरवरी व 1 मार्च, 2019

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

गुरुवार
28 फरवरी, 2019
सायं : 4 से 7 बजे

-: स्थान :-
सी4जी पार्क, जनकपुरी, नई दिल्ली
श्रीराम मन्दिर एवं गुरुद्वारा के बीच वाला पार्क, सी ब्लाक जनकपुरी

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से यह समारोह आयोजित किया जा रहा है। समस्त आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	बलदेव सचदेवा	वीरेन्द्र सरदाना	शिवकुमार मदान	रमेशचन्द आर्य
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		प० दिल्ली वेद प्रचार मंडल		आ.स. पंखा रोड जनकपुरी	

यज्ञ-प्रवचन एवं भव्य जन्मोत्सव समारोह

शुक्रवार
1 मार्च, 2019
प्रातः 9 से 1:30 बजे

-: स्थान :-
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र
गाजीपुर, दिल्ली
निकट आनन्द विहार बस अड्डा

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों से अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

निवेदक — कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें

महाशय धर्मपाल	वेदव्रत शर्मा	चौ. लक्ष्मीचन्द	सुबोध कुमार	अशोक गुप्ता	सुनहरीलाल यादव	हरिओम बंसल
प्रधान	उप प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर				वेद प्रचार मंडल पूर्वी दिल्ली		

195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) तदनुसार 28 फरवरी एवं 1 मार्च

आर्यसमाजें उत्साह के साथ आयोजित करें

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणा स्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) जोकि इस वर्ष **28 फरवरी एवं 1 मार्च** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन 1 मार्च को एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है।

- शेष पृष्ठ 8 पर

गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय के

कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी पदभार ग्रहण करने पर हार्दिक स्वागत

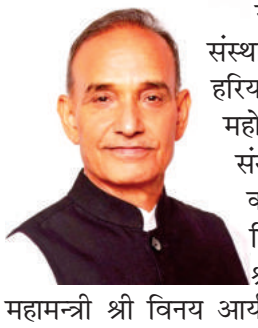

गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार की प्रयोजक संस्थाओं - आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान महोदयों की उपस्थिति में कुलाधिपति चयन समिति ने मानव संसाधन विकास राज्यमन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का माननीय कुलाधिपति निर्वाचित किया। 11 फरवरी, 2019 को प्रायोजक सभाओं के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, मा. रामपाल जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने उनके आवास पर पहुंचकर माल्यार्पण के साथ उनका स्वागत किया तथा पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा एवं महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने फोन पर उन्हें बधाई दी। डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने विश्वविद्यालय पहुंचकर कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से

16वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

बुधवार 20 मार्च, 2019 ★ रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली-1 ★ समय : 3 से 7 बजे

वेद-स्वाध्याय

वरेण्य धन की प्राप्ति

यन्मन्य से वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने।। -ऋ. 5। 39। 2
ऋषिः अत्रिः।। **देवता** - इन्द्रः।। **छन्दः** निचृदनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - इन्द्र = हे परमेश्वर! **यत्** = जिसे तू **वरेण्यम्**= वरने योग्य और **द्युक्षम्**= तेजोयुक्त ऐश्वर्य **मन्यसे**= मानता है **तत्**= उसे **आभर**= हमारे लिए ला, जिससे कि **वयम्**= हम **ते**= तेरे **तस्य**= उस **अकूपारस्य**= अकुत्सितपूरण, जिससे अपने को भरना कुत्सित न हो, ऐसे **दावने**= दान को **विद्याम**= प्राप्त कर सकें।

विनय- संसार में मनुष्यों के पास अन्नभण्डार, पशु, पुत्र, यान, सम्मान, मुद्राएँ (रुपया-पैसा), प्रतिष्ठा, प्रभाव, साख आदि नाना प्रकार के ऐश्वर्य होते हैं और यह भी ठीक है कि इस धन-ऐश्वर्य द्वारा ही संसार के बड़े काम चल रहे हैं, सुख भोगे और भुगाये जा रहे हैं, पर ऐसे लोग भी बहुत हैं जिनका यह धन उन्हें सुखी और अच्छा बनाने की जगह उन्हें दुःखी और अवनत कर रहा है। धन के कारण उनके शरीर, मन और आत्मा निर्बल होते जा रहे हैं। ऐसे भी हैं जिनका धन उनके ही नहीं किन्तु अन्यों के भी विनाश का कारण हो रहा है। ऐसे धन को पाकर हम क्या करेंगे? यह वरेण्य धन नहीं है। इसका तो न होना अच्छा है। एवं, कइयों का धन इतना निस्तेज होता है कि यदि वह उन्हें हानि नहीं पहुँचाता है तो कम-से-कम उन्हें लाभ भी नहीं पहुँचाता। उनके धन में शक्ति नहीं होती, वह उनके उपयोग में नहीं आता या नहीं आ सकता। वह ऐसा ही है जैसा कि मिटटी का ढेर। ऐसे धन को प्राप्त करके हम क्या करेंगे? अतः हमें तो अपने वरेण्य और द्युतिवाले धन का ही दान करो।

पर इस जटिल संसार में ऐसे सच्चे धन का पता पाना हमारे लिए लगभग असम्भव है। परिमित ज्ञानवाला मनुष्य यह कहाँ तक जान सकता है कि यह धन कैसा है? इसीलिए हे परमेश्वर! तुम्हीं कुछ ऐसा करो कि हमारे पास वरनेयोग्य और तेजस्वी धन का ही आगम हो। तेरी समझ ही निर्भ्रान्त है, पक्की है, अतः हम तो कहते हैं कि तू जिसे सच्चा धन समझता है उसे ही हमारे पास आने दे। जो धन वरणीय नहीं है, जो तेजरहित है उस कुत्सित धन से हम अपने को भरना नहीं चाहते। ऐसा धन चाहे कितनी मात्रा में हमारे सामने आये, चाहे कितने प्रलोभक सुन्दर रूप में हमारे सामने आये, उसे हम कभी पाना नहीं चाहते, उससे हम बचना चाहते हैं। ऐसा कुत्सित धन हमारे पास जमा न हो, अतः तुम ही ऐसा करो कि हमारे पास वही धन खिंचकर आये, वही धन सञ्चित हो जो वरनेयोग्य है, जिससे हमारे शरीर, मन, आत्मा की वास्तविक उन्नति हो, जिससे सब लोगों का कल्याण हो और जो कभी निस्तेज, निरर्थक और भाररूप न हो। हे परमैश्वर्यवाले! तुझ द्वारा हम सदा ऐसे ही धन को प्राप्त करना चाहते हैं।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

लोकसभा में श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा जी द्वारा प्रस्तुत शाकाहार बिल

जगत कल्याण का एक अच्छा बिल

अक्सर देश में मांसाहारी भोजन पर प्रतिबंध को लेकर कोई न कोई बहस चल रही होती है। मांसाहार के समर्थक और आलोचक दोनों ही तरह के लोग आमने-सामने भी आते रहते हैं। कई बार अभद्र भाषा का भी इस्तेमाल किया जाता है और सरकारों पर दबाव भी बनाया जाता है कि मांसाहारी भोजन पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। हर बार सरकारें असमंजस में भी होती हैं कि क्या किया जाये, क्या नहीं?

किन्तु इसका हल भारतीय जनता पार्टी के सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने पिछले दिनों लोकसभा में पेश कर दिया। उनकी तरफ से एक निजी बिल पेश किया गया जिसमें सरकारी बैठकों और कार्यक्रमों में मांसाहारी भोजन परोसने पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। अपने बिल पर प्रवेश सिंह वर्मा ने कहा कि मांसहारी खाद्य पदार्थों के सेवन से न केवल जानवरों के साथ दुर्व्यवहार और हत्याएं होती हैं बल्कि विनाशकारी पर्यावरणीय प्रभाव भी होते हैं। उन्होंनें इस बिल में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि दुनिया को जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभावों से बचाने के लिए पशु उत्पाद की खपत कम आवश्यक है। मांस उद्योग के विनाशकारी प्रभाव हैं तथा इस उद्योग से जानवरों को भी भीषण पीड़ा व वेदना से गुजरना पड़ता है।

इसे एक अच्छी खबर और बेहतरीन मांग कही जानी चाहिए, क्योंकि दूसरों को सही रास्ते पर लाने से पहले खुद सही रास्ते पर आना जरुरी होता है। सरकारों का दायित्व भी यही बनता है कि पहले स्वयं शाकाहार अपनाया जाये बाद में इसके लाभ जनता तक पहुंचाए जायें। निःसंदेह पश्चिम दिल्ली के सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा की इस बिल के पेश करने को लेकर जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। हालाँकि पिछले वर्ष मई में रेल मंत्रालय द्वारा भी 2 अक्टूबर को रेलवे परिसर में नॉनवेज न परोसने की सिफारिश की थी कि गांधी जयंती स्वच्छता दिवस के साथ-साथ शाकाहार दिवस के रूप में भी जाना जाएगा। इससे पहले अप्रैल 2017 में पशु प्रेमी संस्था पेटा द्वारा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पत्र के माध्यम से अपील की गयी थी कि सभी सरकारी बैठकों और कार्यक्रमों में सभी तरह के मांसाहार पर रोक लगा दी जाये।

पेटा ने अपने पत्र में लिखा था कि पेटा की इस मांग का समर्थन करते हुए जर्मनी के पर्यावरण मंत्री ने सरकारी बैठकों में खाने की सूची से मांसाहारी पदार्थों का परोसे जाना प्रतिबंधित कर दिया है। इसी से प्रभावित होकर पेटा ने भारत के प्रधानमंत्री मोदी से भी आग्रह किया था कि इससे एक ओर ग्रीन हाउस गैसों पर नियंत्रण होगा तथा दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के मुद्दे से निपटने में भी मदद मिलेगी।

अथर्ववेद में भी कहा गया है कि जो मनुष्य घोड़े, गाय आदि पशुओं का मांस खाता है, वह राक्षस है और यजुर्वेद में कहा गया है कि सभी प्राणीमात्र को मित्र की दृष्टि से देखो। किन्तु दुःखद है कि आज ऐसे सुंदर कथनों का पालन नहीं किया जा रहा है। यह जरूर है कि दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत में नवरात्र और सावन के महीने में बड़ी संख्या में लोग मांसाहार बंद कर देते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में छठ के दौरान मांसाहार बंद हो जाता है। लेकिन कोई प्रतिबंधित नहीं करता। इस तरह की मांग की अपने आप में एक समस्या है। परन्तु लोगों को समझना चाहिए कि यह मामला धार्मिक नहीं है, यह प्रकृति से जुड़ा मामला है। जब किसी पशु को मारा जाता है तब उसे उतनी ही वेदना होती है जितनी किसी मनुष्य को मारने से होती है। पशु स्वेच्छा से नहीं मर रहा है। अगर कोई हमें-तुम्हें मारता है, तो हम स्वेच्छा से नहीं मरेंगें। जो उस समय हमारे मन पर बीतेगी वही उस समय पशु के मन पर बीतती हैं। उसके पूरे शरीर पर हिंसा, वेदना, पीड़ा फैल जाती है। उसका पूरा शरीर विष से भर जाता है, शरीर की सब ग्रंथियां जहर छोड़ती हैं क्योंकि पशु न चाहते हुए भी मर रहा है और फिर जो लोग मांस खाते वही जहरीले भाव उनके शरीर में चले जाते हैं। वह मनुष्य दिखने में ही मनुष्य

.....अथर्ववेद में भी कहा गया है कि जो मनुष्य घोड़े, गाय आदि पशुओं का मांस खाता है, वह राक्षस है और यजुर्वेद में कहा गया है कि सभी प्राणीमात्र को मित्र की दृष्टि से देखो। किन्तु दुःखद है कि आज ऐसे सुंदर कथनों का पालन नहीं किया जा रहा है। ये जरूर है कि दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत में नवरात्र और सावन के महीने में बड़ी संख्या में लोग मांसाहार बंद कर देते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में छठ के दौरान मांसाहार बंद हो जाता है। लेकिन कोई प्रतिबंधित नहीं करता। ...

रहता है अंदर हिंसा भर जाती है और हिंसा कहां व्यक्त हो रही है यह भी छिपा नहीं हैं।

आज लोगों को समझना चाहिए कि हम ऋषि-मुनियों की संताने हैं और हमारे ऋषि मुनि शाकाहारी थे। यही बात पश्चिम के लोगों को भी समझनी चाहिए कि वैज्ञानिक इस तथ्य को मानते हैं कि मानव शरीर का संपूर्ण ढांचा दिखाता है कि वह पूर्णतया शाकाहारी हैं। इसके अलावा यदि वह डार्विन पर भरोसा करते हैं और अगर डार्विन सही है तो आदमी को शाकाहारी होना चाहिए क्योंकि वह आदमी को बन्दर की संतान मानता था और बन्दर मांसाहारी नहीं होते, बंदर पूर्ण शाकाहारी होते हैं।

बहरहाल मूल विषय और मुद्दा यही है कि एक मानव होने के नाते हमें मानव समाज में जीना है, एक जंगल में नहीं, हमें हिंसा से प्रेम से, जीना होगा उसके लिए शाकाहार अपनाना होगा। इसलिए हम सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा का आभार व्यक्त करते हैं कि एक किस्म से उन्होंने जगत कल्याण के लिए इस बिल को संसद में पेश किया हैं।

- सम्पादक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

क्या वेटिकन को पादरियों के पाप स्वीकार हैं?

साल 2005 में एक फिल्म (सिंस) को सेंसर बोर्ड ने प्रतिबंधित कर दिया था फिल्म केरल के एक पादरी पर आधारित थी जिसमें उसके हवस के कृत्यों को उजागर किया था। कैथोलिक लोगों को यह फिल्म बिलकुल भी पसंद नहीं आई, जिसके चलते इस फिल्म पर बैन लगा दिया गया था। वैसे देखा जाये तो आमतौर पर भारतीय फिल्मों में सफेद लम्बे चोगे धारण किये, चर्च के पादरी दया के सागर, मानवता और अहिंसा की प्रतिमूर्ति दिखाए जाते हैं। लेकिन असल जीवन में देखें तो वेटिकन के पोप फ्रांसिस अपनी प्रार्थना करने के बजाय अपने इन लंपट पादरियों के कुकर्मों के लिए माफी मांगते घूम रहे हैं। वेटिकन के पोप फ्रांसिस ने पिछले सप्ताह माना कि कैथोलिक चर्च में पादरियों और बिशपों ने ननों का यौन उत्पीड़न किया। वेटिकन सिटी की महिलाओं पर केंद्रित एक पत्रिका में पादरियों द्वारा ननों के उत्पीड़न की बात सामने आई है। इसमें कहा गया है कि ननों का गर्भपात कराया गया है या उन्हें अपने बच्चों की परवरिश अकेले करनी पड़ रही है।

इससे पहले जुलाई 2008 में 16वें पोप बेनेडिक्ट ने भी आस्ट्रेलिया दौरे में पादरियों द्वारा यौनाचार किए जाने के मामलों के लिए भी माफी मांगी थी। उस समय वहां 107 अभियोग सामने थे। पोप दुराचार के शिकार लोगों से मिले थे तथा माफी मांगी थी। उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया तथा युवाओं को भविष्य में पादरियों की वासना-हवस से बचाने के लिए प्रभावी तरीके लागू किए जाने का आश्वासन दिया था। एक रिपोर्ट के अनुसार 1980 से 2015 के बीच ऑस्ट्रेलिया के 1000 कैथोलिक संस्थानों में 4,444 बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ , वहीं एक दूसरी जांच के मुताबिक देश के करीब 40 फीसदी चर्च पर बच्चों के यौन शोषण के आरोप हैं।

अभी तक आस्ट्रेलिया, आयरलैंड, बैल्जियम, अमेरिका के पादरियों द्वारा यौन शोषण के सबसे ज्यादा प्रभावित देश माने जाते थे अब इस कड़ी में तेजी से भारत का नाम भी उभरता जा रहा है। चर्च के

.... आमतौर पर भारतीय फिल्मों में सफेद लम्बे चोगे धारण किये, चर्च के पादरी दया के सागर, मानवता और अहिंसा की प्रतिमूर्ति दिखाए जाते हैं। लेकिन असल जीवन में देखें तो वेटिकन के पोप फ्रांसिस अपनी प्रार्थना करने के बजाय अपने इन लंपट पादरियों के कुकर्मों के लिए माफी मांगते घूम रहे हैं। ....

सीटिंग रूम में, ईसा-मसीह की निहारती हुई तस्वीर धीमे-धीमे चलते पंखे और वहां फुसफुसाहट में बात करती ननें ऐसी घटनाओं की जिक्र करती हैं कि जब चर्च से जुड़े पादरी उनके बैडरूम में घुसे और उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाया।

पिछले दिनों एक नन ने जालंधर के बिशप फ्रैंको मुलक्कल पर 2014 से 2016 के बीच उसके साथ 13 बार बलात्कार करने का आरोप लगाया था। पिछले वर्ष ही एक के बाद एक, कुल 5 पादरियों ने एक महिला को ब्लैकमेल कर उसके साथ 380 बार बलात्कार करने की खबर ने भी पादरियों के कारनामों से चर्च पर सवाल खड़े किये थे। 2017 में केरल के कन्नूर में चर्च के पादरी के नाबालिग लड़की के साथ रेप के मामले में पुलिस ने पांच नन के खिलाफ भी मामला दर्ज किया था।

पादरियों की हवस के शिकार बच्चें और ननों की बातें उजागर होते देख कर वैटिकन को चर्च की अपनी नींव हिलती दिख रही है क्योंकि अब आम जनता के नैतिकता के पैमाने बदल गए हैं। चर्च अपने पादरियों की नाजायज संतानों की समस्या को भी झेल रहा है। भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली और आस्ट्रेलिया में कई औरतें पादरियों से गर्भवती होकर उनके अवैध बच्चो को पालने पर मजबूर हैं। कई चर्चों ने इन औरतों से समझौते पर साइन करवा कर मुआवजे दे दिए गए हैं। लेकिन वैटिकन इन मामलों को रोक नहीं पा रहा है। चर्चों के सैक्स किस्से कम होने के बजाय बढ़ते जा रहे हैं। मार्च 2010 में न्यूयार्क टाइम्स की सैक्स स्कैंडलों पर कवरेज के लिए आलोचना भी की गई थी। क्योंकि अखबार ने 200 बहरे बच्चों के साथ पादरियों द्वारा किये गये दुराचार की खबरें प्रकाशित कर दी थीं।

हालाँकि यह कोई नये ताजातरीन मामले नहीं हैं। शुरू से पादरी और बिशप ननों का यौन शोषण करते आ रहे हैं। इसके बावजूद भारत की ननों की समस्या धुंधली पड़ी रहती है। इसकी वजह चुप रहने की संस्कृति भी हो सकती है। कई ननों को लगता है कि शोषण तो आम है, कोई भी खुलकर बोलने को तैयार नहीं, ज्यादातर ननें तभी बात करती हैं जब उन्हें यह तसल्ली दी जाए कि उनकी पहचान छुपाई जाएगी। दूसरा अनेकों ननें पादरियों को ईसा मसीह का प्रतिनिधि भी मानती हैं धार्मिकता के बहाव में खामोश रह जाती है। तीसरा आवाज उठाने का मतलब आर्थिक परेशानी भी होगी। कई ननों के समूह वित्तीय रूप से पादरियों और बिशपों के अधीन होते हैं। इस सबके बाद यह भी है कि एक अरब से ज्यादा जनसंख्या वाले भारत में कैथिलक ईसाइयों की संख्या करीब 2 करोड़ है। कई ननों को लगता है कि यौन शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद करना, चर्च की प्रतिष्ठा धूमिल कर सकता है। अन्य मतों की आलोचना भी झेलनी पड़ेगी। इस सबकी आड़ में कैथोलिक चर्च के पादरी अपनी हवस का खेल खेल रहे हैं जिसकी कीमत ननों और बच्चों को चुकानी पड़ रही है।

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

नेताजी की सिंह गर्जना

गतांक से आगे -

कांग्रेस को तिलांजलि दे युवक-हृदय सम्राट सुभाषचन्द्र बोस ने 'फ़ारवर्ड ब्लॉक' नामक एक नये दल की स्थापना की। देखते-देखते इसमें भर्ती होने के लिए नौजवानों का तांता लग गया।

सन् 1940 में कांग्रेस के सभापति थे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और भारत के वाइसराय लार्ड लिनलिथगो। अंग्रेजों से समझौता करने के लिए मौलाना आज़ाद के सभापतित्व में रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन की तैयारियां ज़ोरों पर थीं। सुभाष बाबू को कांग्रेस से निकाल बाहर फेंकने में बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता फूले नहीं समा रहे थे। भयभीत थे तो बस मारक्विस ऑफ़ लिनलिथगो। वे खूब समझते थे कि कांग्रेस से निकलने के बाद तो बोस पर रहा-सहा अंकुश भी गया। तभी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने फ़ारवर्ड ब्लॉक के प्लेटफ़ार्म से 'समझौता-विरोधी सम्मेलन' का एलान कर एक ज़ोरदार धमाका किया, जिससे अंग्रेजों के अलावा कांग्रेसियों के भी हाथ-पैर फूल गये। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे स्वयं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

उन दिनों मैं गुप्तचर विभाग की स्पेशल ब्रांच (राजनीतिक शाखा) में कार्यरत था और नियुक्ति थी मेरी लखनऊ शहर में। इम्पीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो (तत्कालीन केन्द्रीय गुप्तचर विभाग) ने रातों-रात सभी प्रान्तीय सरकारों को खटखटाया कि वे रामगढ़ में आयोजित फ़ारवर्ड ब्लॉक के अधिवेशन में शिरकत करने वाले विभिन्न प्रान्तों से आये अपने-अपने 'सस्पेक्ट्स' (संदिग्ध व्यक्तियों) की गतिविधि 'कवर' करके रिपोर्ट तुरन्त केन्द्रीय सरकार को भेजें।

लखनऊ से रवाना हुए छात्र नेता अंसार हरवानी और सत्यकुमार राय। दोनों ही मुझे कान्याकुब्ज कालेज के छात्र की हैसियत से जानते थे, गुप्तचर रूप में कदापि नहीं। जबकि वास्तव में मैं गुप्तचर था और बाकायदा छात्र होना मेरा छद्मवेश था। दोनों फ़ारवर्ड ब्लॉक के प्रबल समर्थक थे, अत: उनकी गतिविधि पर नज़र रखने का ज़िम्मा मुझे सौंपा गया। तभी तो मैं भी वहां दो रोज़ पहले पहुंच गया। रामगढ़ मैदान में ही दोनों सभाएं होने वाली थीं ठीक शाम साढ़े पांच बजे। दोनों के बीच फ़ासला रहा होगा लगभग तीन सौ मीटर। राष्ट्र गौरव सुभाषचन्द्र बोस के स्वागतार्थ स्वामी सहजानन्द सरस्वती, मास्टर तारासिंह, सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर, अरविन्द बोस, प्रकाशचन्द्र, शचीनद्रनाथ सान्याल आदि अनेक क्रान्तिकारी एक दिन पहले ही पहुंच गए थे।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव ऋषि पर्व के रूप में मनाएँ – धर्मपाल आर्य

ऐसे विशेष अवसरों पर वेद और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ सुझाव

भारतीय काल चक्र गणना के अनुसार आदित्यों में उत्तम फाल्गुन मास का आगमन होता है तो ऋतुओं के राजा वसन्त भी विराजमान हो जाते हैं। जिनकी उपस्थिति में प्रकृति अपनी निराली छटा चारों ओर बिखेरना प्रारंभ कर देती है।

दिग्-दिगन्तों में जोश, उमंग, उत्साह, प्रेरणा से ओत्-प्रोत् हरियाली और फूलों की भीनि-भीनि सुगंध से जहां सारा विश्व महकने लगता है वहीं भारतीय जनमानस में एक तीव्र स्फटिंग की तरह क्रांति का संचार करने वाले पर्वों की दिव्य श्रृंखला प्रस्तुत हो जाती है इसीलिए भारतवर्ष को पर्वो का देश कहा जाता है । पर्व -उल्लास एवं प्रसन्नता का द्योतक है। उत्सव अर्थात् उत्साह पूर्वक किए जाने वाले कार्य जो दूसरों में भी उत्साह व प्रसन्नता का संचार कर देते हैं वहीं प्रेरणा दायक कार्य पर्व और उत्सव कहे जाते हैं। इसी वासन्ती पर्वो की श्रृंखला में आने वाले पर्व-वसन्त-पंचमी, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव, होली मंगल मिलन व नववर्ष (आर्यसमाज स्थापना दिवस) जैसे - पर्वो का संगम इस महान ऋतुराज वासन्ती वेला में होने वाला है।

वास्तव में पर्वो की उत्कृष्ट परम्परा भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उसके विशुद्ध रूप उद्देश्य, उद्भव, परिणाम एवं मनाने के वैदिक, सामाजिक और भौगोलिक विधान एवं परम्परा को आगे प्रसारित करते चले जाएं। जिससे लाखों वर्षों पुरानी ये परम्पराएँ इसी प्रकार समाज का दिशा निर्देशन एवं मानव में महानता का संचार करती हुई आगे बढती रहे। ये उदात्त भावनाएँ जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक बृहद् रहस्यों को अपने में छिपाए हैं वही सामाजिक तौर पर भी ये अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को अपने में संजोये हुए हैं।

जब हम वसन्त-पंचमी के परिदृश्य में जाना चाहते हैं तो एक दग्ध चिंगारी हमारे रोंगटे खडे कर देने का कार्य करती है कि एक बालक हकीकत राय धर्म की प्रतिमूर्ति बनकर वीभत्स मृत्यु को सामने देखकर भी धर्म का किसी प्रकार भी त्याग नहीं करता है? उस महान् बलिदानी की यादों को लेकर ये वसन्त-पंचमी हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। फाल्गुन कृष्ण दशमी का पर्व महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के रूप में उनका स्मरण कराता है। जिसका आधारभूत पर्व एक महानपर्व महर्षि बोध दिवस, अथवा महाशिवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन जब हम पौराणिक जगत् में महाशिवरात्रि के हजारों साल के इतिहास को देखते हैं तो समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास और अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिपात् नहीं होता है। लेकिन सन (1837) की वह महिमा मण्डित महाशिवरात्रि जिसने एक महत् तत्त्व को जन्म दिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर "ऋर्षि बोध-रात्रि" के नाम से सुविख्यात् हो गई है। आज हम उस महान पर्व को वास्तविक स्वरूप में मनाने

अथवा वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार प्रसार के दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो सके, कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्न प्रकार है -

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के संबंध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3- नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और बाल प्रतियोगिताओं का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4- महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग ऋषिपर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने की अभी से तैयारी प्रारंभ कर दें।

5- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य के वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

6- प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद् स्तर पर आयोजन करें ।

7- समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें। अपने घर, परिवार, आस-पास के लोगों को मिठाइयां बांटें। आर्यसमाजें क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टरों, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। इस हेतु बालोपयोगी कुछ वैदिक साहित्य यथा- 'मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव बैनर, लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द की रंगीन चित्रावली, एवं आर्यसमाज के कार्य एवं इतिहास की जानकारी देता 'एक निमन्त्रण' पत्रक आदि विशिष्ट प्रचार सामग्री विशेष रूप से धर्म प्रचार हेतु दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।

8- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं ।

9- आर्य समाज के स्वार्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा ।

10- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यो जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए ।

11- महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोध दिवस की बधाई 'ऋषि-पर्व की शुभकामनाओं के रूप में प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को अवश्य भेजनी चाहिए ।

उपरोक्त प्रकार से आर्य पर्वों को मनाएँ, इनके उद्देश्य एवं उपयोगिता को संज्ञान में रखें और अन्यों को भी अवगत कराएं। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

व्यंग्यात्मक लेख

अब राहुल बनवाएंगे राम मन्दिर !

पहले भक्ति में काव्य और साहित्य होता था। अब भक्ति के दिन फिर गये अब तो भक्ति में राजनीति होती है, गठबंधन होते हैं, गाली गलोच, उठापटक के अलावा अब भक्ति में जो सबसे जरूरी चीज होती वह होती है - वोट।

हालाँकि भक्ति में तू-तू-मैं-मैं के अलावा बड़े और छोटे भक्त भी होते हैं। भक्ति की आलोचना होती है तो भक्ति की जयकार भी होती है। भक्ति तो भक्ति होती है, चाहे भगवान की हो, बाबाओं की हो या अपने-अपने अराध्य नेताओं की।

फिलहाल महागठबंधन के अनेकों भावी प्रधानमंत्रियों में शामिल राहुल गाँधी जी भी अब इस भक्ति की निर्गुण धारा में बह चले हैं। कुछ दिन पहले तक वह परम शिवभक्त थे, अब मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में एक पोस्टर में राहुल गांधी को राम भक्त बताया गया है कि वह अयोध्या में सर्वसम्मति से भव्य राम मंदिर बनवायेंगे।

जो लोग अभी तक राहुल के धर्म पर सवाल उठा रहे थे उन्हें समझ जाना चाहिए कि भक्ति की महिमा अपरम्पार होती हैं। अब वो दिन दूर नहीं जब राजनैतिक पार्टियों के कार्यालयों में भजन, कीर्तन जागरण और माता की चौकियां सजा करेगी। छोटे-छोटे भक्त, बड़े-बड़े भक्तों को अपने हाथों से स्वादिष्ट भंडारे खिलाया करेंगे।

इससे वह लोग चिढ़े तो चिढ़े जिन्हें कभी माँ गंगा बुला लेती है, कभी बाबा पशुपतिनाथ जी बुलाते है। अब भक्ति पर किसी का पेटेंट तो है नहीं कि सिर्फ आप ही भक्ति करो। अरे! भक्ति की महिमा देखो जबसे राहुल जी ने अपना जनेऊ दिखाया हैं अचानक उन्हें बाबा कैलाश ने बुला लिया था, अब तीन राज्य जीत लिए बस उनके मुंह से माता का एक जयकारा और लग जाये बेडा काफी हद तक पार हो जायेगा।

भक्ति बड़ी जरुरी भी है, भक्ति में ही मजबूत वोट बैंक है। देश में सदभावना, एकता, अखण्डता, बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार, आम जन के जरुरी मुद्दे फालतू की चीजें है। गरीब जनता को भक्ति का मर्म चाहिए। उन्हें समझना चाहिए मेहनत, मजदूरी पढ़ाई-लिखाई में कुछ नहीं रखा बेटा, भक्ति से जीवन काटना चाहिए। शायद इस देश को यही घुट्टी पिलानी शेष रह गयी है।

राहुल गाँधी ट्वीट करते हैं कि प्यारे मोदी भक्तों, चीन हमें पछाड़ चुका है जबकि तुम्हारे मास्टर हमें खोखले नारे दे रहे हैं।

ये कैसे भक्त हैं जो अपनी भक्ति पर तो घमंड करते हैं और मोदी भक्तों की भक्ति का मजाक उडाते हैं। इन्हें क्या पता कि इस भक्ति का फल चारधाम की यात्रा से मीठा होता है और आने वाली कई पीढ़ियों को मुक्ति का मार्ग सुझाता है। बड़े भक्तों को छोटे भक्तों से सीखना चाहिए कि असली भक्त ईर्ष्या-द्वेष से दूर रहते हैं। क्योंकि किसी का जन्म से नेता-भक्त होना तो तभी संभव है जब स्वयं ऊपर वाला ऐसा चाहें कि "जाओ पुत्र! पृथ्वी पर जन्म लेकर नेताओं के भक्त बनकर मंगल गीत गाओ इसी से तुम्हारा कल्याण होगा।"

यह सब भक्तों की ही महिमा है वरना समाज वैज्ञानिक अभी तक नेताओं को दुर्लभ प्रजातियों में रखकर बचाने के लिए शोध कर रहे होते। किन्तु भक्तों की अपार श्रद्धा, स्नेह और भक्ति का प्रतिफल देखिये हर एक नुक्कड़ पर, नाई की दुकान, बस की हर दूसरी सीट, बिजली, टेलीफोन के दफ्तरों से लेकर सब जगह नेता विराजमान हैं।

इस भक्ति में जहाँ आनन्द है, उल्लास है, सेल्फी है और गर्व है वहां इस भक्ति में अपच भी है। एक का भक्त दूसरे के भक्तों को मुर्ख समझ रहा है। जबकि भक्ति की इस धारा में सभी भक्तों को एक दूसरों को बराबर सम्मान चाहिए। क्योंकि मुर्खता भी एक वरदान ही है इसमें अपने विनाश का पता नहीं चलता, देश तबाह हो जाते हैं, समाज उजड़ जाते हैं पर अहसास तक नहीं होता। अत इस वरदान को गंभीरता से लेना चाहिए।

सभी भक्तों को मिलकर अपने लिए समान आरक्षण मांगना चाहिए, जिस तरह ईश्वर प्राणीमात्र का सृजन कर रहा उसी तरह भक्त भी अपने-अपने नेताओं के भविष्य का सृजन कर रहे हैं। बाकी देश के गरीब, मजदूर, किसान तो नारों में ही छपे है और छपते रहेंगे। जब भक्ति का यह सुखद अहसास मन में समाता है तब इस देश के भविष्य की चिंता छोड़कर भक्त बन जाने का मन करता है खैर कबीर, तुलसी, रसखान और मीरा के भक्तिकाल से निकलकर कब हम इस राजनितिक भक्तिकाल में पहुँच गये ये बात या तो स्वयं भगवान जानते है या फिर इस देश के नेता।

परमसत्य ये भी है भक्ति में बड़ी शक्ति होती है अगर आप बिना झिझक के अपने नेता में पूरा विश्वास बनाए रखेंगे तो वे आपकी हमेशा सहायता करेंगे और आपको हर मुश्किल से बाहर निकालेंगे। जिसे इस बात पर विश्वास न हो वो हिरण्य कश्यप के बेटे भक्त प्रहलाद की कहानी दुबारा पढ़ सकते है। जिस किसी को यह बात बुरी लगे उसे सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि बुरा ना मानो कुछ दिन बाद होली है।

- राजीव चौधरी

Alarming time to look beyond the one-child policy In India

Born in the urban estate of a Big town, 17-year-old, Mr. Surya is just like the any other youth of India. His parents brought him up very dedicatedly, patiently, and carefully. They actually left no stone unturned while looking after his education, providing health facilities, amusement options and a lot more. Being the only child to his parents, who are again the single children to their respective parents, it was Surya who has to look for the aging elders at his home, ultimately, which includes- four of his grandparents and two- his own parents.

Rapidly increasing population in last century had occurred as a serious issue to the Government and for the developing country like India- Higher Population appears as a burden on its resources, be it- water, fresh air, land, food, minerals, housing, jobs and more. Worldwide, in terms of population size wise, India is currently in the second place, preceded by its neighbour country China. After the last census in 2011, the population of India was counted as 1.23 crore, which, before crossing the next decade, has reached 1.33 crore.

Time to time, a number of steps/ initiatives have been taken up by the government, civil societies, NGOs etc. to put a check on the rising population like- Formulation of National Population Policy, Family planning practices, One-Child Policy, etc. Although these initiatives have worked in the desirable direction and have taken us at a certain point yet with many aftermaths. At present, the growth rate of population in India is 1.1%. Of course, this is what we approached for, to control the demographic dividend and to ensure better welfare services to all. But are we sure of where we all are heading to?

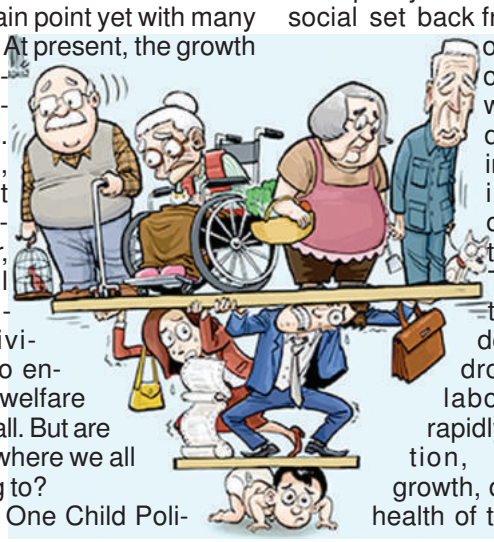

In fact, One Child Policy in India is dragging us towards a much darker period where the social consequences will be more and more severe and their repercussions will reverberate for generations to come. Perhaps, that's what our neighbour country -China has already experienced and genuinely, in 2015, they had announced a major shift from their controversial one-child policy to two child policy. China had seen the social set back from their previous notorious one-child policy which was introduced nationally in 1979, with the idea to slow down the population growth rate. The abolition of the policy was done in the backdrop of shrinking labour workforce, rapidly aging population, unbalanced growth, disturbed social health of the country and numerous other issues.

In India too, we have reached 1.1% population growth rate and this has again taken the debate of population controlling measures at the forefront, especially, questioning the credibility of one-child policy across the nation. With the narrowing down of the family pyramid, India's joint family structure has already been shaken up and we have moved towards the nuclear family structure. This, no doubt has killed the spirit of Big families and hence, family values which the children ought to learn from their uncles/aunts-'chacha-Chachi', 'bua-fufa', 'mausa-mausi', grandparents, grandparents (maternal), cousins, relatives of the relatives and so on.

Government's clampdown of births will grapple India in future- with the shortage of staff for armed forces, diminish the demographic dividend and decrease the stake of the Indian diaspora in taking high-end jobs across the world. (One must know that India is the

Continue... P. 7

Veda Prarthana - II
Regveda - 26

Drinking Alcohol is a Bad Vice with Many Ill Effects

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो
न सुरायाम्।
ऊर्धन नग्ना जरन्ते।।
– ऋग्वेद 8/2/12

***Hrtsu pftiiso yudhyante
durmadiiso na suriiyiim.
Oordhan nagnii jarante.
(Rig Veda 8/2/12)***

Human beings listen! Most religions on the earth including those based on dharma traditions i.e. Vedic, Hindu, Buddhist, Jain and Sikh Dharma, Islam, Parsi (Zoarastrian) and some sects of Christianity recommend complete abstinence from alcohol and consider getting drunk a sin. While most sects of Christianity and Jewish Religion allow limited use of wine for enjoyment, however, they also condemn getting drunk and consider it a sin. The holy scriptures of the various faiths support the above stated beliefs. Despite the above condemnations against alcohol and/or getting drunk, people belonging to all the major faiths frequently drink alcohol at homes, parties, at sports events, public places and some even in houses of worship, and a percentage of the persons drinking alcohol at such occasions get frankly drunk.

In the Western nations including Europe, Americas, and Australia, every city and town has many bars, pubs or liquor shops. Many of these are open .24 hours a day for their clients just like one can find tea stalls open in most cities of India 24 hours a day. Moreover, in recent years even alcohol has become very popular in India. There are thousands of factories and distilleries in India, which operate 24 hours a day to manufacture millions of liters of alcohol/liquor. Indian government collects taxes from them for its revenue coffers to serve the public. In return, government has given the factories licenses for liquor manufacture. The same Indian government paradoxically on the one hand declares alcohol/liquor as harmful to the health of public and condemns it through advertising campaigns using large posters, television and other media, yet on the other hand, every year permits new licenses to hundreds of new liquor shops to sell more alcohol. To make things more ludicrous the government requires manufac turers to state on the label of every liquor bottle that alcohol is bad for your health. This Veda mantra clearly states that the first harm alcohol does is to dim one's intellect. Alcohol in Vedic scriptures is considered a *tamasik* food, which means foods that make you dull, inert, with diminished inclination or energy to do virtuous deeds.

Alcohol is made by fermenting grains, fruit juices etc. and the fermentation process turns even *satwik* foods that promote virtue, calm, tranquility, peaceful energy and activities into *tamasik* foods. A drunken person loses his/her ability to think properly to differentiate right from wrong, proper duty to lack of responsi bility, just from unjust etc. Intoxicated alcoholic persons often utter vulgar words, become paranoid and quarrel or fight with others without being provoked. Once a person is addicted to alcohol, he/she loses wisdom, cultured manners, gentleness and instead becomes uncultured, vulgar, cruel and violent. If he/she cannot easily buy or access alcohol, then the person to satisfy his/her addiction starts to steal, rob or even murder people. All such types of examples one can observe in the society in various villages, towns and cities. Many families are terribly unhappy because of addicts in their families and many have been completely ruined because of addicted members among them.

Moreover, many young addicted persons develop terrible chronic diseases such as liver failure, cancer, tuberculosis and have died as a result. In the olden days in India, when the kings used Vedic dharma as the moral basis of their rule, they would declare that there is not a single drunk or addict in his nation.

In the Bible (New Testa ment), while a limited use of wine is allowed, it condemns getting drunk. It states that drunkards will not enter heaven and those who abuse alcohol should not be ordained to become ministers.

In Islam, there is a clear declaration that anybody who drinks alcohol or offers it to others, sells or buys alcohol, or encourages others to use liquor, God condemns all of them.

Scriptures of Jain religion state that a person under the influence of alcohol performs a variety of shameful deeds and as

- Acharya Gyaneshwarya

a consequence suffers misery in this life as well as in afterlife.

Scriptures of Budhhism state, "Human beings if you need to be afraid of something, then be afraid of liquor because it is the generator of other sinful deeds and wrong conduct.

Scriptures of Sikh religion state that a person who uses liquor, as a consequence of his/her actions destroys all the benefits that might have resulted from doing good deeds, going on pilgrimage, doing fasts etc.

Mahatma Gandhi stated, "I consider alcohol use to be more shameful than stealing or prostitution because it is the generator of both of these vices. Indian citizens should destroy all shops that sell liquor."

In modem world, one of the major causes of the spiritual and moral decline of human beings is excessive drinking and its promotion by the media. Because of this terrible vice, human beings have been steadily losing virtuous moral values such as honesty, integrity, hard work and replacing them with bad and superficial values.

Dear Supreme Father we pray to you for Your help to inspire the minds of people who drink alcohol to give up this vice which destroys people's mind and happiness. May the alcoholic persons' life become clean (free of alcohol) and they find personal happiness as well as help others around them find similar happiness.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (77)
शब्द प्रयोगाः

गतांक से आगे....

नैके-अनेके, अनन्यः-नान्यः इत्यादयः प्रयोगाः

प्रश्नः 'वने अनेके वृक्षाः सन्ति' उत 'वने नैके वृक्षाः सन्ति?' कः प्रयोगः साधुः?

उत्तरम् : 'वने अनेके वृक्षाः सन्ति' वा 'वने नैके वृक्षाः सन्ति' उभयथा अपि प्रयोगः साधुः।

व्यावहारिके विद्वन्मुखात् अस त् श्रूयन्ते नान्यः-अनन्यः, नैके-अनेके, नाश्वः- अनश्वः इत्यादयः प्रयोगाः। कथमत्र व्यवस्था इति पश्येम।

नान्यः, नैके, नाश्वः इत्यादिषु प्रयोगेषु 'न' इति निषेधार्थकम् अव्ययम्। तस्माद् अचि परे सवर्णदीर्घादिषु तेषु एवं रूपाणि भवन्ति।

अनन्यः, अनेके, अनश्वः इत्यादिषु 'नञ्' इति निषेधार्थकम् अव्ययम् नञ्तत्पुरुषसमासः च।

नञ् + अन्य इत्यस्यां दशायां नलोपो नञः (६.३.७३) इत्यनेन सूत्रेण नलोपे अ + अन्य।

तदा तस्मान् नुडचि (६.३.७४) इत्यनेन नुडागमे अ + नुट् + अन्य।

उकारटकारयोः इत्संज्ञायां लोपे अ + न् + अन्य - अनन्य इति रूपम्।

नान्यः, अनन्यः उभयोरर्थे नास्ति भेदः। समासकार्ये उभयोर्मध्ये भेदः भवति।

'न' अव्यये समासो भवति। सह सुपा (२.१.४) इत्यनेन सूत्रेण केवलसमासः द्य नान्य इति समस्तप्रयोगः।

'नञ' अव्यये समासो भवति। सः नञ्तत्पुरुषसमासः अस्ति। अनन्य इति समस्तप्रयोगः।

नञ्तत्पुरुषे नकारस्य लोपः नुडागमश्च भवति। परन्तु 'न' इति अव्ययेन समासे ते तथा न भवति।

- क्रमशः

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM, BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,
आदि के लिए सम्पर्क करें - *धर्मवीर आर्य, 9810216281*

प्रेरक प्रसंग

दूर भगे दुराभाव, जगी जब मन में ज्योति

श्री केशवप्रसादजी भटनागर उत्तर प्रदेश में एक रेलवे-कर्मचारी थे। आप अपने किसी सगे-सम्बन्धी के सत्संग से आर्यसमाजी बन गये, परन्तु आपके पिताजी बड़े मांसाहारी व सुरापान करने वाले व्यक्ति थे। केशवप्रसादजी पर आर्यसमाज का ऐसा गहरा रंग चढ़ा कि कोई भी व्यसन इन्हें छू न सका।

केशवप्रसादजी का विवाह हो गया। पत्नी पर भी इनके विचारों का प्रभाव पड़ा। दोनों ऐसे विशुद्ध शाकाहारी थे कि जहाँ-कहीं मांस बनता था, वहाँ भोजन ही न करते थे। पिताजी का जब जी चाहता घर में मांस पका लेते। जिस दिन ये मांस पकाते, केशवप्रसादजी व उनकी पत्नी यह कह देते कि आज हमें किसी के यहाँ जाना है। ये घर भोजन ही न करते। किसी शाकाहारी ढाबे पर जाकर भोजन कर लेते। देर तक इनका ऐसा नियम रहा।

एक दिन केशवप्रसादजी के पिता के एक वृद्ध मित्र ने उन्हें खूब लताड़ा, "तुम्हें लज्जा नहीं आती कि तुम बुढ़ापे में भी गुलछर्रे उड़ाते हो। चटोरपना तुम नहीं छोड़ सकते। तेरा बेटा व बहू ढाबे पर भोजन करते हैं। कुछ तो शर्म करो।"

इस लताड़ से वृद्ध पिता ने कहा कि भविष्य में वह घर पर मांस न खाएगा और न ही पकाएगा।

पुत्र ने रेलवे के मांसाहारी नौकर से कह दिया कि जिस दिन इन्होंने मांस खाना हो, इन्हें तुम कहीं बाहर बनाकर खिला दिया करो। पैसे मैं दे दूँगा। उस युग में युवक बड़ों के सामने नहीं बोल सकते थे, अतः केशवप्रसादजी अपने पिता को निर्भीक होकर न कह सके कि मैं न मांस खाऊँगा, न खाने दूँगा तथापि उन पुरुषों का आचरण कितना ऊँचा था कि आर्य विचारधारा कर लेते थे।

'ओ३म् वाक् वाक्' यह आर्ष वचन बोलने के वे ही अधिकारी हैं जो मांस, सुरापान, अण्डा, मीन (मछली) आदि का खान-पान एकदम छोड़ देते हैं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 में

सत्यार्थ प्रकाश कक्षाएं

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 में वैदिक प्रवक्ता आचार्य इन्द्रदेव जी के सान्निध्य में 18 से 23 फवरी को सायं 5 से 7 बजे तक सत्यार्थ प्रकाश की कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। सभी कक्षाओं में उपस्थित प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। प्रतिभागी अने साथ नोटबुक व पैन अवश्य लेकर आएं। कक्षाओं में चर्चा के विषय - निराकार ईश्वर, जीवात्मा, उत्तम आचरण, सुखी गृहस्थ, ईश्वर उपासना विधि, सन्तानों की शिक्षा आदि होंगे। अधिक जानकारी के लिए श्री राजीव चौधरी (9810014097) अथवा श्री राजेन्द्र वर्मा (9810045198) से सम्पर्क करें।

- विजय लखनपाल, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की सब आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. सम्पादक : जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके।

2. डी.टी.पी. ऑपरेटर : जो सभा के मुखपत्र आर्यसन्देश तथा पुस्तक विभाग के प्रकाशन कार्य को निपुणता के साथ कर सके।

3. **सेल्समैन:** जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।

4. हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक : जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें।

5. एकाउंटेंट : जो तथा सहयोगी संस्थाओं में दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर भी जाकर/वहीं रहकर कार्य कर सकें।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि/आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें। **Email:aryasabha@yahoo.com** *- महामन्त्री*

आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली में

प्रवासी भारतीय अभिनन्दन

आर्यसमाज महावीर नगर, तिलक नगर नई दिल्ली के तत्त्वावधान में प्रवासी भारतीयों का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर एवं पं. मायाराम शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ, जिसमें 16 आर्य भारतीयों प्रवासियों ने भाग लिया। ये प्रवासी भारतीय मलेशिया, मॉरीशस व आस्ट्रेलिया से पधारे थे।

दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ से पधारे श्री सत्यदेव आर्य ने अपने सौम्य स्वभाव से आर्यजनों को प्रभावित किया। मॉरीशस से प्रधारे श्री पीताम्बर जी ने सबको मॉरीशस पधारने का आमन्त्रण दिया। इस अवसर पर पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री बलदेव सचदेवा, श्री राजपाल आर्य, मन्त्राणी श्रीमती अमृत रानी, श्रीमती कान्ता राठौर, श्रीमती स्वर्ण कान्ता, पं. गुरुदत्त चातूरी, श्रीमती सविता पीताम्बर, श्रीमती वरुणा जाईन, अमरदीप सिंह जी उपस्थित थे।

आर्यसमाज के प्रधान श्री यशपाल आर्य जी ने आर्यसमाज के प्रवासियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए समाज को संगठित करने पर बल दिया। अन्त में सभी महानुभावों के लिए स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया। *- मोहिणी देवी, प्रधाना*

आर्यसमाज कीर्ति नगर में ध्यान योग साधना शिविर

आर्यसमाज कीर्ति नगर में दिनांक 18 से 24 फरवरी तक आचार्य ईश्वरानन्द जी (रोजड़) के सान्ध्यि में ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ प्रात: 6:30 बजे से ध्यान प्रात: 7 से 8:15 बजे, योग दर्शन कक्षा दोपहर 3 से 4 बजे तथा भजन व ध्यान कार्यक्रम सायं 7 से 9 बजे तक होगा।

- सतीश चड्डा, मन्त्री

बिकाऊ है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल की एम्बूलेंस (मारुति वैन) 2004 मॉडल बिकाऊ है। इसके लिए निविदाएं आमन्त्रित हैं। जो महानुभाव खरीदना चाहें वे श्री महेन्द्र सिंह लोहचब, मन्त्री (9999148483) से सम्पर्क करें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

- महामन्त्री

शोक समाचार

श्री दयानन्द त्यागी जी का निधन

आर्यसमाज विकास नगर, उत्तम नगर के प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा के माननीय प्रतिनिधि श्री दयानन्द त्यागी जी का 9 फरवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे लगभग 60 वर्ष के थे। अगले दिन 10 फरवरी को उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रिति के साथ काली बस्ती उत्तम नगर शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 फरवरी को प्रात: 10 बजे से सनातन धर्म मन्दिर, 271 बी-2 ब्लाक, शिवनगर जनकपुरी में आयोजित होगी।

डॉ. सुभाष चन्द्र भाटिया जी का निधन

दिल्ली के जाने माने हौम्योपैथिक चिकित्सक, दिल्ली सरकार द्वारा लाईफ़ टाईम एचिवमैन्ट अवार्ड से सम्मानित, आर्ययसमाज त्रिनगर के संस्थापक डॉ. हरिश्चन्द्र जी के सुपुत्र एवं आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य श्री अजय भाटिया जी के पूज्य पिता डॉ. सुभाष चन्द्र भाटिया जी का 7 फरवरी, 2019 को लगभग 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 10 फरवरी को आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों, उनके निजी परिवार एवं अनेक समाजों के सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री अमृतभूषण खन्ना जी का निधन

आर्यसमाज शकरपुर के कर्मठ सदस्य, दानवीर सहयोगी श्री अमृत भूषण जी खन्ना का रविवार 10 फरवरी को निधन हो गया। वे 75 वर्ष के थे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 12 फरवरी को श्रीकृष्ण मन्दिर, गणेश नगर-2, शकरपुर, दिल्ली में सम्पन्न हुई।

पं. रामलाल आर्य जी (यू.एस.ए.) का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के वरिष्ठ संरक्षक, पूर्व अधिकारी, धर्म प्रचारक पं. रामलाल आर्य जी का 28 जनवरी को न्यूयार्क अमेरिका में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार 31 जनवरी को किया गया। पं. रामलाल जी ने न केवल न्यूयार्क अपितु अमेरिका के अन्य राज्यों में भी आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए कार्य किया। पं. रामलाल जी ने ग्याना के स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग लिया जहां उन्हें जेल में भी रहना पड़ा। स्वतन्त्रता के उपरान्त वर्ष 1966 में उन्हें रिहा किया गया। ग्याना में आर्यसमाज की स्थापना का श्रेय पं. रामलाल जी को ही है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

Continue from Page 5

only country in the world with a demographic dividend which means we are the only country where the number of workable population (15-59 age) is more than the dependent population (0-14, 59+ age)). Moreover, the choice and number of childbearing differs class-wise, as observed that the economic well-off segment is more prone towards producing fewer children as compared to those who are economically poor. This has made the number of children inversely proportional to the symbol of social status, in the majority of Indian minds.

One child policy has also acted against women- whose consent and a stake in reproductive decisions is hardly counted in orthodox societies, and the blame, as well as burden, comes as whole to them. Even the patriarchal mindsets have resorted towards a higher rate of abortions, female infanticide and even abandoning female infants. This has brought the reproductive health of women the vulnerable and coercively hampering their rights. Female-Infanticide-which apart from being a total unethical practice, is acting negatively towards the sex ratio in India. Even the shared household responsibility factor has hit the low along with rise in crime against women, girls and brought the existence of fairer sex at questionable place.

Apart from providing a balanced growth, and value-based family environment, having more than one child in a family keep themselves emotional and social connected and be there for each other in any sort of time. As seen in the above-stated case of Surya- the single child can hardly become the citizens with cooperative mindsets. Since they don't learn to share toys, things, foods, living place and even feelings to their age-mates in the beginning days to the psychological development of their life, their later phases of life too bear the aftermaths of their isolative upbringing. The duty to provide a sister or a brother to the child lies with the parents, which will also help the child once the parents are not there for him. The child will learn to give and take love, execute responsibilities and understand the world around him more clearly. Additionally, the duty of upbringing of the child will also get relieved when another sibling is there to look after his/her brother/sister.

Ranging from Macro to Micro level, economic to political level; the one-child policy appears as a policy which is more of regressive nature than that of a progressive one. In the context of social and cultural settings of India, One-child policy is strictly not going to be ok. Our government and educated people must learn from the example of China and must not overstrain the implementation of One child Policy here. However, our policymakers must not resort to these coercive practices rather they should resort to persuasion and education vis-a-vis ensuring the improved quality life of the people here.

- Ms. Minakshi Sehrawat

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 फरवरी, 2019 से रविवार 17 फरवरी, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14-15 फरवरी, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 फरवरी, 2019

निवेदक

महाशय धर्मपाल, प्रधान | सुरेन्द्र कुमार रैली, व. उप प्रधान | सतीश चड्डा, महामन्त्री | अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

प्रथम पृष्ठ का शेष

195वां महर्षि दयानन्द ....

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस वर्ष पूर्वी एवं पश्चिमी दिल्ली में दोनों दिन भजन संध्या का आयोजन किया गया है। अत: आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें और दोनों दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ ऋषि लंगर, शोभा यात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जी की जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आयोजन सम्बन्धी कुछ सुझाव पृष्ठ पर 5 पर दिए गए हैं। - *महामन्त्री*

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह